Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies
Online ISSN 2278-8808, SJIF 2024 = 8.153
https://www.srjis.com/issues_data/242
Peer Reviewed & Refereed Journal, NOV-DEC 2024, Vol- 13/86

भारतीय ज्ञान परंपरा और राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020

डॉ0 अमित कुमार[1], डॉ0 अवध बिहारी लाल[2] & डॉ0 श्याम[3]

[1]सहायक आचार्य, बी.एड.विभाग, मदन मोहन मालवीय पीजी0 कॉलेज, भाटपार रानी, देवरिया (उ0प्र0)

[2]सहायक आचार्य, बी.एड.विभाग, मदन मोहन मालवीय पीजी0 कॉलेज, भाटपार रानी, देवरिया (उ0प्र0)

[3]सहायक आचार्य, बी.एड.विभाग, मदन मोहन मालवीय पीजी0 कॉलेज, भाटपार रानी, देवरिया (उ0प्र0)

Paper Received On: 20 NOV 2024

Peer Reviewed On: 24 DEC 2024

Published On: 01 JAN 2025

Abstract

यह भारत भूमि महान है। इस भूमि की ज्ञान की अविरल धारा ने संपूर्ण जगत को सींचा है। भारत की प्राचीन शिक्षा आध्यात्मिकता पर आधारित थी। शिक्षा, मुक्ति एवं आत्मबोध के साधन के रूप में थी। भारतीय ज्ञान परम्परा पुरातन युग से बहुत समृद्ध रहीं है। आधुनिक युग में प्रचलित भारतीय ज्ञान और विदेशों से आ रहीं तथा कथित नवीन खोज जो हमारे ग्रंथों में पूर्व से ही उल्लिखित है, भारतीय ज्ञान परम्परा के समृद्धशाली होने का प्रमाण है। भारतीय ज्ञान परंपरा का अर्थ केवल पुरातन ज्ञान को परोसना नहीं है। सनातन जीवनदृष्टि को युगानुकूल, देशानुकूल परिभाषा में पुनर्भाषित करते हुए आज के समय में लागू करने का नाम 'भारतीय ज्ञान परंपरा' है। इसी संदर्भ में, राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 पूरी शिक्षा व्यवस्था में सुधार और पुनर्गठन का प्रस्ताव करती है ताकि इसका इक्कीसवीं सदी की शिक्षा के आकांक्षात्मक लक्ष्यों के साथ मेल तो बिठाया ही जा सके, साथ ही इसे प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा और सांस्कृतिक मूल्यों की विरासत की नींव पर समृद्ध भी बनाया जा सके। राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 ने भारत के सभी छात्र–छात्राओं द्वारा अच्छे, सफल, मौलिक सोच वाले, परिस्थिति अनुकूल और रचनाशील व्यक्ति बनने के लिए जिन मुख्य विषयों, कौशलों व क्षमताओं को आवश्यक माना है उसमें 'भारत का ज्ञान' एक मुख्य विषय है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020, 'भारत के ज्ञान' को परिभाषित करते हुए कहती है कि ''भारत के ज्ञान' में प्राचीन भारत से प्राप्त ज्ञान और आधुनिक भारत और इसकी सफलताओं और चुनौतियों में इसके योगदान के साथ ही शिक्षा, स्वास्थ्य, पर्यावरण आदि के संबंध में भारत की भविष्य की आकांक्षाओं का एक स्पष्ट भाव शामिल होगा। प्राचीन भारत की 'गुरुकुल' परंपरा से बहुत कुछ सीखा जा सकता है, जो आधुनिक शिक्षा में चर्चा का विषय बनने के सदियों पहले से अकादमिक शिक्षा से परे समग्र विकास पर ध्यान केंद्रित करता था। प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली में नीतिशास्त्रीयता एवं मूल्य शिक्षा (Ethics and value education) शिक्षा के मूल में रही थी। आत्मनिर्भरता, समानुभूति, रचनात्मकता और अखंडता जैसे मूल्य प्राचीन भारत में एक प्रमुख क्षेत्र बने रहे थे, जिनकी आज भी प्रासंगिकता है। शिक्षा का प्राचीन मूल्यांकन विषयगत ज्ञान की ग्रेडिंग तक ही सीमित नहीं था। छात्रों का मूल्यांकन उनके द्वारा सीखे गए कौशल और व्यावहारिक ज्ञान को वास्तविक जीवन की स्थितियों में सफलतापूर्वक लागू कर सकने की उनकी क्षमता के आधार पर किया जाता था। आधुनिक शिक्षा प्रणाली भी मूल्यांकन की ऐसी ही एक प्रणाली विकसित कर सकती है।

Copyright © 2025, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

प्रस्तावना

प्राचीन भारतीय शिक्षा अपने उद्देश्यों एवं व्यावहारिकता के कारण संसार में अनूठी थी। भारत के पास बौद्धिक अनुसंधान एवं मूल ग्रंथों के धरोहर की एक अत्यंत समृद्ध परंपरा रही है जो कि सदियों पुरानी है। भारत की प्राचीन शिक्षा आध्यात्मिकता पर आधारित थी। शिक्षा, मुक्ति एवं आत्मबोध के साधन के रूप में थी। यह व्यक्ति के लिये नहीं बल्कि धर्म के लिये थी। भारत की शैक्षिक एवं सांस्कृतिक परम्परा विश्व इतिहास में प्राचीनतम है। भारत में ज्ञान की सदियों पुरानी परंपरा है, जिसमें दर्शन, गणित, विज्ञान, चिकित्सा, साहित्य, कला और आध्यात्मिकता जैसे लगभग सभी क्षेत्रों में योगदान शामिल है। आज हम जिन परंपराओं,प्रथाओं, विश्वासों और रीति–रिवाजों का पालन करते हैं, वे सभी हजारों साल से चली आ रही हमारी भारतीय ज्ञान परंपरा' पर ही आधारित हैं। स्वामी विवेकानंद, महर्षि अरविंद घोष, गुरुदेव रविंद्र नाथ टैगोर, महात्मा गाँधी आदि कई शिक्षाविदों ने भारतीय ज्ञान परंपरा को ही आदर्श मानकर शिक्षा के लक्ष्य निर्धारित किये।

भारतीय ज्ञान परंपरा के मुख्य तत्व

1. **''समग्र दृष्टिकोण''**: भारतीय परंपरा में शिक्षा का उद्देश्य केवल जानकारी प्राप्त करना नहीं, बल्कि समग्र विकास करना है।

2. **''आध्यात्मिकता और नैतिकता''**: शिक्षा के माध्यम से आत्मा, मन और शरीर का संतुलन स्थापित करना।

3. **''व्यावहारिकता'':** कृषि, खगोलशास्त्र, वास्तुशास्त्र, और चिकित्सा जैसे व्यावहारिक विषयों में प्राचीन भारतीय ज्ञान का योगदान।

4. **''भाषा और साहित्य'':** संस्कृत, प्राकृत, तमिल आदि भाषाओं में अद्भुत साहित्य का सृजन।

5. **''वैज्ञानिक दृष्टिकोण'':** आर्यभट्ट, भास्कराचार्य, चरक, और सुश्रुत जैसे वैज्ञानिकों और चिकित्सकों का योगदान।

पूर्व की दो शिक्षा नीतियों ने भी कई प्रगतिशील सुझाव दिए किन्तु दुर्भाग्य से एकपक्षीय योग्यता के आधार पर नौकरी देने वाली शिक्षा व्यवस्था को नहीं बदल पाए। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 भारतीय शिक्षा प्रणाली को पुनः जागृत करने और इसे समकालीन आवश्यकताओं के साथ जोड़ने का प्रयास है। यह नीति भारतीय ज्ञान परंपरा को आधुनिक शिक्षा प्रणाली में शामिल करने पर बल देती है।

NEP 2020 में भारतीय ज्ञान परंपरा का समावेश

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारतीय ज्ञान परंपरा को मुख्यधारा में लाने के लिए निम्नलिखित प्रावधान करती है:

1. **''मातृभाषा में शिक्षा''**: प्रारंभिक शिक्षा में मातृभाषा के उपयोग को प्रोत्साहित किया गया है, जिससे छात्रों को भारतीय भाषाओं और साहित्य से जुड़ने का अवसर मिलेगा।

Copyright © 2025, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

2. **''भारतीय दर्शन और संस्कृति का समावेश''**: पाठ्यक्रम में योग, ध्यान, और नैतिक शिक्षा को शामिल किया गया है।

3. **''बहु–विषयक दृष्टिकोण'':** भारतीय परंपरा के बहु–विषयक ज्ञान को आधुनिक शिक्षा प्रणाली में सम्मिलित करना।

4. **''संस्कृत और अन्य भारतीय भाषाओं को प्रोत्साहन'':** संस्कृत को स्कूल और उच्च शिक्षा स्तर पर बढ़ावा देने की योजना।

5. **''शोध और नवाचार'':** प्राचीन भारतीय विज्ञान, गणित, और प्रौद्योगिकी पर शोध को प्रोत्साहन।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 ऐसे बड़े बदलाव की और कदम बढ़ाने की बात करती है जिसको लागू करने में वही शिक्षक सक्षम होंगें जो अपने आधार और भारतीय संस्कृति पर गर्व कर सकें। वैसे शिक्षक जो घर और समाज से भारतीय ज्ञान परंपरा को आत्मसात की हुई भारतीय संस्कृति से भी जुड़े रहे हों और इस कारण पल भर में 'दृष्टि से सृष्टि' को समझने की क्षमता रखते हों। आज हम देख रहें हैं कि भौतिकतावाद की अंधी दौड़ में मनुष्य बहुत ही अशांत है। जिसकी वजह से वर्तमान में हिंसा, आतंकवाद, देशों का आपसी टकराव और अशांति का वातावरण बढ़ा है। रूस–यूक्रेन विवाद, इजराइल–फिलिस्तीन विवाद इसके समसामयिक उदाहरण हैं। ऐसे समय में विश्व को भारतीय ज्ञान परंपरा पर आधारित भारतीय संस्कृति के वैश्विक मूल्यों को अपनाने की अत्यधिक आवश्यकता है। सम्पूर्ण विश्व को एक परिवार के रूप में जोड़ने वाली भारतीय ज्ञान परंपरा में माना गया है कि– अयं निजः परो वेति, गणना लघुचेतसाम्। उदारचरितानां तु, वसुधैवकुटुम्बकम्॥ अर्थात् भारतीय ज्ञान परंपरा के अनुसार,यह उसका है, यह मेरा है, इस तरह की दृष्टि को संकुचित माना गया है और कहा गया है कि उदार चरित रखने वाले लोगों के लिए तो यह सम्पूर्ण धरती एक परिवार ही है। इसके साथ ही ऋग्वैदिक ऋषि कहते हैं कि– 'आ नो भद्राः क्रतवों यंतु विश्वतः' अर्थात विश्व के सभी कल्याणकारी विचार हमारी तरफ आयें। भारतीय ज्ञान परंपरा' शिक्षा का एक व्यापक दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है जो भौतिक ज्ञान को आध्यात्मिक ज्ञान के साथ एकीकृत करता है। भारतीय जीवन दर्शन में गहराई से निहित यह परंपरा संतुलित विकास पर जोर देती है जिसमें न केवल बौद्धिक बल्कि आध्यात्मिक, नैतिक और भावनात्मक विकास भी शामिल है।

भारतीय ज्ञान परंपरा, दार्शनिक, आध्यात्मिक और सांस्कृतिक ज्ञान के विशाल भंडार के साथ, आधुनिक शिक्षा के मुख्य रूप से भौतिकवादी फोकस के विपरीत प्रस्तुत करती है। यह सदियों पुराना ज्ञान वेदों, उपनिषदों, भगवद गीता और अन्य ग्रंथों जैसे ग्रंथों में निहित है, जो वास्तविकता, चेतना, नैतिकता और आंतरिक शांति की खोज की प्रकृति का पता लगाते हैं। इस परंपरा के केंद्र में यह विचार है कि शिक्षा केवल बाहरी ज्ञान के अधिग्रहण तक ही सीमित नहीं होनी चाहिए, बल्कि किसी के आंतरिक आत्म की प्राप्ति और सभी जीवन के अंतर्संबंध को भी बढ़ावा देना चाहिए। इन प्राचीन सिद्धांतों

Copyright © 2025, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

को वर्तमान शिक्षा प्रणाली में एकीकृत करने से सीखने का अनुभव अधिक संतुलित और समृद्ध हो सकता है। धर्म की अवधारणा, जो भारतीय दर्शन में कर्तव्यों, अधिकारों, कानूनों, आचरण, गुणों और 'जीवन जीने के सही तरीके' को संदर्भित करती है, इस एकीकरण का एक अभिन्न अंग हो सकती है। छात्रों को धर्म के बारे में पढ़ाने से नैतिक जिम्मेदारी और नैतिक जीवन की भावना पैदा हो सकती है। यह आज की दुनिया में विशेष रूप से प्रासंगिक है, जहां प्रौद्योगिकी, पर्यावरण और राजनीति सहित विभिन्न क्षेत्रों में नैतिक और नैतिक मुद्दे तेजी से सामने आ रहे हैं।

भारतीय ज्ञान परंपरा का एक अन्य महत्वपूर्ण पहलू योग और ध्यान का अभ्यास है। ये अभ्यास केवल शारीरिक व्यायाम नहीं हैं, बल्कि शरीर, मन और आत्मा में सामंजस्य स्थापित करने के लिए डिजाइन किए गए गहन आध्यात्मिक अनुशासन हैं। उन्हें शैक्षिक सेटिंग्स में शामिल करने से कई लाभ हो सकते हैं। शोध से पता चला है कि योग और ध्यान एकाग्रता बढ़ा सकते हैं, तनाव कम कर सकते हैं और मानसिक स्वास्थ्य में सुधार कर सकते हैं। यह उन छात्रों के लिए विशेष रूप से फायदेमंद हो सकता है जो अक्सर अत्यधिक शैक्षणिक और सामाजिक दबावों का सामना करते हैं। इसके अलावा, प्राचीन भारतीय ग्रंथों की कथाएँ और शिक्षाएँ नैतिक और नैतिक मार्गदर्शन प्रदान कर सकती हैं। इन ग्रंथों में ऐसी कहानियाँ हैं जो कर्म (कारण और प्रभाव का नियम) और मोक्ष (मुक्ति या आत्मज्ञान) के सिद्धांतों को दर्शाती हैं। इन अवधारणाओं को समझने से छात्रों को उनके कार्यों और उनके परिणामों के महत्व को समझने में मदद मिल सकती है, जिससे उन्हें जिम्मेदारीपूर्वक और नैतिक रूप से कार्य करने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है।

भारत के त्योहारों, कलाओं और रीति–रिवाजों की खोज सहित सांस्कृतिक अध्ययनों को एकीकृ त करने से छात्रों को इन आध्यात्मिक शिक्षाओं के संदर्भ और पृष्ठभूमि की गहरी समझ मिल सकती है। इस समझ से समकालीन जीवन में इन शिक्षाओं की प्रासंगिकता और महत्व की अधिक सराहना हो सकती है। उदाहरण के लिए, विभिन्न धार्मिक और दार्शनिक मान्यताओं से जुड़ी भारत भर में विविध सांस्कृतिक प्रथाओं का अध्ययन, विभिन्न दृष्टिकोणों और जीवन के तरीकों के लिए सम्मान और सहिष्णुता की भावना को बढ़ावा दे सकता है।

शिक्षा के लिए एक अंतःविषय दृष्टिकोण, जो आध्यात्मिक ज्ञान को वैज्ञानिक और मानवतावादी अध्ययन के साथ एकीकृत करता है, दुनिया की अधिक व्यापक समझ प्रदान कर सकता है। उदाहरण के लिए, वैज्ञानिक और दार्शनिक दोनों दृष्टिकोणों से वास्तविकता की प्रकृति को समझने के लिए क्वांटम भौतिकी के सिद्धांतों को माया (भ्रम) की भारतीय अवधारणा के साथ जोड़कर खोजा जा सकता है। यह दृष्टिकोण छात्रों के बीच आलोचनात्मक सोच और खुले दिमाग को बढ़ावा दे सकता है, जिससे उन्हें ज्ञान और समझ के विभिन्न क्षेत्रों के बीच संबंध देखने की अनुमति मिलती है। इसके अलावा, आधुनिक शिक्षा में भारतीय ज्ञान परंपरा का अनुप्रयोग अकादमिक शिक्षा से कहीं आगे तक फैला हुआ है। इसमें भावनात्मक बुद्धिमत्ता, लचीलापन और सहानुभूति का विकास शामिल है। ये गुण व्यक्तिगत

Copyright © 2025, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

भलाई और प्रभावी सामाजिक संपर्क के लिए आवश्यक हैं। उदाहरण के लिए, भावनात्मक बुद्धिमत्ता किसी की भावनाओं को प्रबंधित करने और दूसरों की भावनाओं को समझने में मदद करती है, जिससे व्यक्तिगत संबंध बेहतर होते हैं और संघर्ष का समाधान होता है। विकसित देशों के अनुभवों से यह स्पष्ट हो चुका है कि अपनी भाषा, संस्कृति और परंपराओं में सुशिक्षित होने से हानि नहीं बल्कि शैक्षिक, सामाजिक और तकनीकी उन्नति के लिए लाभ ही मिला है। इसी संदर्भ में, राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 ने भारत के सभी छात्र–छात्राओं द्वारा अच्छे, सफल, मौलिक सोच वाले, परिस्थिति अनुकूल और रचनाशील व्यक्ति बनने के लिए जिन मुख्य विषयों, कौशलों व क्षमताओं को आवश्यक माना है उसमें 'भारत का ज्ञान' एक मुख्य विषय है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020, 'भारत के ज्ञान' को परिभाषित करते हुए कहती है कि ''भारत के ज्ञान' में प्राचीन भारत से प्राप्त ज्ञान और आधुनिक भारत और इसकी सफलताओं और चुनौतियों में इसके योगदान के साथ ही शिक्षा, स्वास्थ्य, पर्यावरण आदि के संबंध में भारत की भविष्य की आकांक्षाओं का एक स्पष्ट भाव शामिल होगा।

भारतीय ज्ञान परंपरा को आधुनिक शिक्षा में एकीकृत करने का विचार भी अधिक समग्र शैक्षिक मॉडल की ओर वैश्विक बदलाव के साथ संरेखित है जो कल्याण, स्थिरता और नैतिक जीवन पर जोर देता है। यह एकीकरण व्यक्तियों की एक नई पीढ़ी को बढ़ावा दे सकता है जो न केवल अकादमिक रूप से कुशल हैं बल्कि भावनात्मक रूप से संतुलित, नैतिक रूप से उन्मुख और आध्यात्मिक रूप से जागरूक हैं। वे पर्यावरणीय मुद्दों से लेकर सामाजिक असमानता तक आधुनिक दुनिया की जटिल चुनौतियों का अधिक दयालु और समग्र दृष्टिकोण से समाधान करने के लिए बेहतर ढंग से सुसज्जित होंगे। हालाँकि, इस प्राचीन ज्ञान को आधुनिक शिक्षा प्रणालियों में एकीकृत करना चुनौतियों से रहित नहीं है। यह सुनिश्चित करने के लिए एक सावधानीपूर्वक और विचारशील दृष्टिकोण की आवश्यकता है कि यह मौजूदा शैक्षिक ढांचे के साथ टकराव के बजाय पूरक हो। इसके लिए शिक्षक प्रशिक्षण और पाठ्यक्रम विकास की भी आवश्यकता है जो प्राचीन ज्ञान और समकालीन समाज की जरूरतों दोनों का सम्मान करता हो।

निष्कर्षतः आधुनिक शिक्षा प्रणाली में भारतीय ज्ञान परम्परा का एकीकरण सीखने के लिए अधिक संतुलित और समग्र दृष्टिकोण का वादा करता है। यह न केवल बौद्धिक रूप से सक्षम व्यक्तियों बल्कि भावनात्मक रूप से परिपक्व, नैतिक रूप से मजबूत और आध्यात्मिक रूप से जागृत नागरिकों के पोषण का मार्ग प्रदान करता है। ऐसी शिक्षा प्रणाली से न केवल व्यक्तिगत शिक्षार्थियों को लाभ होगा बल्कि एक अधिक सामंजस्यपूर्ण, दयालु और टिकाऊ दुनिया के निर्माण में भी योगदान मिलेगा

विश्व धरोहर के लिए इन समृद्ध विरासत ओं को न केवल भावी पीढ़ी के लिए पोषित और संरक्षित किया जाना चाहिए बल्कि हमारी शिक्षा प्रणाली के जरिए इन्हें बढ़ावा दिया जाना चाहिए और इन्हें नई उपयोग में भी लाना चाहिए। हमारी प्राचीनतम भारतीय ज्ञान विरासत परंपरा एवं शिक्षण

Copyright © 2025, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

पद्धतियों के सनातन मूल्यों को आधुनिक शैक्षिक पद्धति और व्यवस्था में अभी सिंचित करना राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का उद्देश्य है।

भारतीय ज्ञान परंपरा जो वैदिक एवं उपनिषद काल में थी, वह बौद्ध और जैन काल में भी बनी रही, विभिन्न विश्वविद्यालयों की स्थापना और शिक्षा व्यवस्था से स्पष्ट परिलक्षित होता है। लेकिन इसका लोप विगत 200–300 वर्षों में हुआ है। भारतीय शिक्षा के इतिहास पर दृष्टिपात करने से ज्ञात होता है की प्राचीन काल में शिक्षा का मूल उद्देश्य ज्ञान की प्राप्ति रहा है। इस उद्देश्य के अनुरूप शिक्षा का स्वरूप और विषय निर्धारित किए जाते थे। आज जरूरत है अध्यात्म को विज्ञान से, परमार्थ को व्यवहार से, परंपरा को आधुनिकता से जोड़ते हुए व्यक्तिक, सामाजिक एवं वैश्विक जीवन में समरसता के लिए एकता के सूत्र को खोजने की। आज पूरा विश्व भारतीय ज्ञान परंपरा की आवश्यकता को महसूस कर रहा है।आज फिर से हमें अपनी ज्ञान परंपरा और सामाजिक व्यवस्था को समझने और अपने तरीके से परिभाषित करने की जरूरत है। अपनी ज्ञान परंपरा, सामाजिक व्यवस्था और जीवनशैली को बाजारवाद से बचाने की जरूरत है। हमें पश्चिमी सभ्यताओं और विदेशी ज्ञान–विज्ञान को दरकिनार कर अपनी परम्पराओं और मान्यताओं का पुनरोत्थान करते हुए भारतीयता में पूरी तरह रमना होगा। सभी विचारधाराओं के लोगों से संवाद करना होगा और उनको साथ लेकर चलना होगा। हमारी परंपरा विविधताओं का सम्मान करने की है और उनमें एकता स्थापित करने की है, जिसे आज अच्छी तरह से व्यवहार में उतारना होगा ताकि भारत पूरे विश्व में एक बड़ी ताकत के रूप में उभर सके। भारतीय ज्ञान परंपरा हजारों वर्ष पुरानी है। इस ज्ञान परंपरा में आधुनिक विज्ञान प्रबंधन सहित सभी क्षेत्राों के लिए अदभुत खजाना है। भारतीय दृष्टिकोण से ही ज्ञान परंपरा का अध्ययन कर हम एक बार फिर विश्व गुरु बन सकते हैं। हमें अपनी मानसिकता को बदलकर अपने जीवन में भारतीयता को अपनाने की जरूरत है। पश्चिम के विकासवादी मॉडल को छोड़कर ही हम दुनिया में खुशहाली ला सकते हैं।

संदर्भ

National Education Policy 2020. Ministry of Education, Government of India, retrieved from https://www.education.gov.in/sites/ upload_ files /mhrd /files/NEP_final _HINDI_0.pdf retrieved on: 14/02/2024

शुक्ल, भारद्वाज (Nov. 2022) ''भारतीय ज्ञान परंपरा और नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति'' https://www.jharkhandlatestnews.com/indian-knowledge-tradition-and-new-national-education-policy-372406-2/ retrieved on: 10/10/2024

Sinha, Pritam Kumar (Dec. 2023) "Bhartiya Gyan Parampara: Enriching Modern Education with Ancient Indian Spiritual Wisdom" https://medium.com/@pritamkumarsinha/bhartiya-gyan-parampara-enriching-modern-education-with-ancient-indian-spiritual-wisdom-a049252c2884 retrieved on: 06/09/2024

Singh, S. K. (July 2023) "मूल्यपरक शिक्षा का आधार है भारतीय ज्ञान परंपरा" https://www.swadeshnews.in/special-edition/indian-knowledge-tradition-is-the-basis-of-value-education-871054 retrieved on: 07/02/2024

त्रिपाठी, श्रीप्रकाश मणि (July 2022) ''भारतीय ज्ञान परंपरा और राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020'' https%//budaunshikhar-com/ retrieved on: 12/011/2024

Copyright © 2025, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies